~:: जितना जिसके लिखा भाग्य, में वो उतना ही पाता ::~~

मेरे दाता के दरबार में, मेरे मालिक के दरबार में, है सबका खाता
जितना जिसके लिखा भाग्य, में वो उतना ही पाता- पाता ||

क्या साधू क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या राणी |
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी करम कहानी |
वो ही सभी के जमाखर्च का, सही हिसाब लगाता || मेरे मालिक के ||

बड़ी कड़ी क़ानून प्रभु की, बड़ी कड़ी मर्यादा |
किसी को कोडी कम ना देता, किसी को दमड़ी ज्यादा |
इसीलिए तो इस दुनिया का, नगर सेठ कहलाता-२ || मेरे मालिक के ||

करते है इन्साफ फैसले, प्रभु आसन पे डटके |
उनका फैसला कभी न बदले, लाख कोई सर पटके |
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता-२ || मेरे मालिक के ||

आच्छी करनी करो कपूरचंद, करम ना करिये काला |
हजार आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला |
सूरदास जी यु कहते है, समय गुजरता जाता -२ || मेरे मालिक के ||

जय श्री नाथ जी की ....